19-2-67 ओम शान्तिः रात्रि क्लास

सारी दुनियां में भक्ति है। भक्ति को दुर्गति कोई भी समझते नही है। अगर अपने को पतित समझते है तो जरूर वो दुर्गति मे है नां। बच्चो को ही अब पता पडा है कि ज्ञान क्या है। भक्ति से अब तुम ज्ञान में ट्रान्सफर हो रहे हो। फिर ज्ञान की प्रारब्ध पूरी हो जावेगी तो फिर भक्ति मे चले जावेंगे। पुरानी दुनियां से वैराग होंगा। बाप कहते है कि बाकी थोडे रोज है। तुम बच्चे तो आधा कल्प के रोगी हो। अब जानते हो कि हम अमर बन जावेंगे। बहुत धनवान बन जावेंगे। तुम बच्चो को तो खुशी ही यह है। इस समय संगम पर तुम भविष्य जन्म लिये पुरुषार्थ कर रहे हो। यह एक संगम युग है। सत और त्रेता के संगम का गायन नही है। उनके बीच मे मुदा(समय) ही है। कलयुग के संगम मे मुदा है पुरुषोतम बनने का। तुम बच्चे जानते हो कि यही सुगम युग है जिसमे ही परमपिता परमात्मा आते है। वो तो समझते है कि युगे-2 भगवान अवतार लेते है। बहुत सारे अवतार बैठ बनाते दिखाते है। वो तो सब फालतु कहानियां ही है भक्ति मार्ग की। अभी तुम ज्ञान मार्ग में हो। अभी तुम ज्ञान मार्ग मे हो। तुमको तो पास्ट का भी पता पडा है नां। तुम ज्ञानी कहलाये जावेंगे। नां कि भक्त। बाप भी है ज्ञान सागर तो तुम बच्चों को भी ज्ञान ही सुनाते है। वहां पर है भक्ति वो तो शास्त्रो को भी ज्ञान ही समझ लेते है। भक्ति को ज्ञान की फिलासाफी कह देते है। यह है ही रूहानी ज्ञान। यहां पर बाप ही बच्चे-बच्ची कह सकते है। कहते है कि हे मेरे बच्चो मै तुमको सदगति देने आया हुआ हूं। कहते है कि तुमको शान्तिःधाम सुखधाम का रस्ता बताने आया हूं। बाप बच्चो को बहुत प्यार से समझाते है कि तुम पुकारते थे नां कि आकर हमारे दुःख हरो। और सुख दो। अभी तुम बच्चे संगम पर हो। कलयुग मे जो है वो पुकारते है। तुम तो अभी मन्दिर आद तीर्थो पर नही जाते हो नां। तुम्हारी बुधी मे तो अब एम आब्जैक्ट सामने ही क्लीयर है। वो तो सिर्फ यात्राओं पर जाकर दर्शन करके आते है। विकार आद और अशुध खान-पान आद से बचते है। आजकल तो शराब आद भी छुपा कर ले जाते है। यह है याद की यात्रा। बाप कहते है कि याद से तमु सतोप्रधान बन जावेंगे। तमोप्रधान से सतोप्रधान जरूर बनना है। तुम सतोप्रधान थे तो विश्व का मालिक थे। अभी तो तुमको अपना घर भी नही है। और फिर विश्व का मालिक बनने पुरुषार्थ कर रहे हो। कल्प पहले जिन्होने वर्सा लिया है वो ही अब भी लेंगे। सब नही ले सकेंगे? भक्ति मार्ग मे तो बहुत ढेर जाकर इकठे होते है। मनुष्य नही जानते है कि देवताओं को यह राज्य कैसे मिला। वो है डबलसिरताजधारी। तुम बच्चे रचता और रचना की आदि मध्य अन्त को जानते हो। सूक्ष्म वतन की तो बात ही नही है। ब्राहमण तुम अभी हो। देवता सतयुग मे आवेंगे। शुद्र है कलयुग में। तुम ब्राहमण संगम युग में। फिर तुम ब्राहमणो से सतयुग मे देवता बनेंगे। मनुष्यों को तो है भक्ति का नशा। यहां पर है ज्ञान का नशा। वो लोग अपने को शास्त्रो की आथारटी समझते है। अभी तुम कितने सयाने समझू बनते हो। नालेज से डाक्टर लोग कितने होशियार हो जाते है। रग-2 को वो लोग जानते है। बडे-2 आप्रेशन करते है। तुम्हारा भी आप्रेशन हो रहा है। तुम्हारे अनेक प्रकार के रोग है। वहां सतयुग में तो कोई भी बिमारी आद होती नही है। तो ही जज नां ही बैरिस्टर आद होते है। वो तो है ही सुखधाम। दुनियां में कितने भभके है। कितने फालोवर्स है। यह है तो सभी भक्ति की ही बाते नां। गृहस्थ व्यवहार मे पवित्र तो रह नही सकते है। तुम बच्चो को युक्ति है। ब्रहमा मुखवंशावली ब्राहमण ब्राहमणियां हो। कमल फूल समान पवित्र रह सकते हो। कमल फूल जैसा गृहस्थी फूल और कोई नही होता है। उनमे बहुत ==-2=== फूल आद होते है। पानी मे भी रहते है परन्तु पानी टच नही करता है। भक्ति मार्ग में शो बहुत है। इसमे तो कुछ भी नही है। सिर्फ मुख्य है ही याद की बात। तुम नेष्ठा और योग अक्षर को उडा ही दो। हम बाबा की याद मे बैठते है। पूछते है नों कि